IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. किरण गुप्ता
प्राचार्या
ज्ञानोदय महाविद्यालय, जैसीनगर सागर

सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओंकी आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है । शोध के लिए सागर शहर के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है । आधुनिकीकरण की अभिवृत्ति जानने के लिए अरूण कुमार सिंह (पटना) बिहार एवं अल्पना सेनगुप्ता (पटना) की मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के परिणामों से प्राप्त हुआ कि स्नातक स्तर पर अध्ययरत छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति पर शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों की छात्राओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

प्रस्तावना –

शिक्षा आधुनिकीकरण का एक सशक्त साधन है जिन समाजों में वातावरण उच्च स्तर का होता है उनमें तीव्रता से सामाजिक परिवर्तन होता है । शिक्षा द्वारा ही आर्थिक विकास के मार्ग खोजे जाते हैं और सामाजिक आकांक्षाओं का निर्धारण किया जाता है ।

आधुनिकीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अथवा समाज परम्परागत अथवा अर्द्धपरंपरागत स्थिति से निकलकर तकनीक को पाना चाहते हैं जो सामाजिक संरचना, मूल्य संवेग और प्रतिमान से संबंधित है।

Modernization अर्थात् आधुनिकीकरण यह शब्द मुख्यतः अंग्रेजी भाषा के शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है । Modernization शब्द की व्युत्पत्ति Modern शब्द लेटिन भाषा के मोगे शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है जो समय चल रहा है या प्रचलित है अतः Modernization का अर्थ यह हुआ कि, जिसका समय चल रहा है या इस समय जिसका प्रचलन है वही Modern है ।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। वैज्ञानिक खोजों एवं अनुसंधानों ने अब तक चलती आ रही दुनिया के परंपरागत जीवन में सार्थक हस्तक्षेप आरंभ किया और परंपरागत जीवन शैली तथा जीवन चिंतन के बीच टकराहट स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । परिणामः परम्पराओं, अंध विश्वासों, भ्रांति आदि चली आ रही मान्यताओं, मूल्यों एवं आस्थाओ की जड़े हिलने लगीं और उनका स्थान लेने के लिए नये तर्क, नये विचार गैरपरम्परागत सोच और प्रभाव पर आधारित चिंतन ने अपने कदम आगे बढ़ाये, यह सब आधुनिकता के आधार बने ।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व –

शोधार्थी को प्रस्तुत शोध की आवश्यकता समाज में महिलाओं की स्थिति को देखकर अनुभव हुई । महिलायें एवं छात्रायें कई बार दहेज प्रथा, जाति प्रथा के कारण अपनी महत्वाकांक्षाओं को दबा देती हैं जिसका प्रभाव उनकी मानसिक स्थिति पर पड़ता है । भारतीय समाज में इस तरह की रीति–रिवाजों की अधिकता है । जिसका अंत होना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में शोध छात्रा ने छात्राओं की अभिवृत्तियों को जानने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत शोध का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि इस शोध द्वारा प्राप्त परिणामों से हम सागर शहर के विभिन्न स्थानों में निवासकर रही छात्राओं में आधुनिकीकरण का स्तर माप सकते हैं ।

समस्या कथन –

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा शोध संबंधी कथन निम्नानुसार है :–

"स्नातक स्तर पर अध्यनरत छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य –

1. सागर शहर के महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रायें समाज के विभिन्न घटकों के संदर्भ में कितने आधुनिक है, कितनी जागरूक है तथा वर्तमान समय में किसी पुरातन विचारधाराओं तथा मान्यताओं से ग्रसित हैं, इसकी जॉच करना ।

2. आधुनिकीकरण के क्षेत्र में शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पनायें –

प्रस्तुत शोध सागर शहर के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण की अभिवृत्ति मापन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है ।

1. शासकीय महाविद्यालय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नही है ।

2. विज्ञान समूह तथा कला समूह में अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. कला एवं वाणिज्य समूह की छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

4. विज्ञान एवं वाणिज्य समूह की छात्राओं में भी आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है ।

5. छात्राओं में धर्म संबंधी तथा विवाह संबंधी घटकों में आधुनिकता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

6. समाज में महिलाओं की स्थिति तथा शिक्षा संबंधी घटकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

न्यादर्श – शासकीय तथ अशासकीय महाविद्यालयों का चयन स्वैच्छिक रूप से किया गया है । जिसमें दो शासकीय महाविद्यालय, शासकीय कन्या महाविद्यालय से एवं शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय से 60–60 छात्रायें इस प्रकार दो अशासकीय महाविद्यालय ज्ञानवीर महाविद्यालय एवं नोबल कॉलेज से 60–60 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है । इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 240 छात्राआं का चयन किया गया है ।

उपकरण –

शोधार्थी द्वारा उपकरण के रूप में अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेनगुप्ता (पटना) बिहार की आभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है । प्रश्नावली में कुल चार प्रमुख घटक सामाजिक धर्म, विवाह, महिलाओं की स्थिति एवं शिक्षा में विभाजित है । प्रत्येक घटक में नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रश्न दिये गये हैं ।

सांख्यिकीय विधि –

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक विचलन का उपयोग किया गया है ।

सारणी क्रमांक–01

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों में तुलनात्मक अध्ययन

शा.महा. विद्यालय की छात्रायें	N_1	N_2	M_1	M_2	σ_1	σ_2	0.05	0.01
120	**60**	**60**	**123**	**122**	**13.07**	**13.27**	**1.98**	**2.63**

क्रांतिक विचलन CR = 0-291

प्राप्त t क्रांतिक विचलन (CR) का मान 0.05 एवं 0.01 स्तरके मानों से कम है । अतः दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः प्रथम परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक–02

विज्ञान समूह एवं कला समूह में अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन

N_1	N_2	M_1	M_2	σ_1	σ_2	CR	0.05	0.01
40	**40**	**130**	**122**	**13.34**	**10.3**	**2.80**	**1.98**	**2.63**

प्राप्त t (क्रांतिक मान) उपरोक्त 0.05 एवं 0.01 के मानों से अधिक है । अतः दोनों में कोई सार्थक अंतर है । अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक–03

कला एवं वाणिज्य समूह की अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

N_1	N_2	M_1	M_2	σ_1	σ_2	CR	0.05	0.01
40	**40**	**122**	**124**	**10.3**	**14.82**	**0.89**	**1.98**	**2.63**

प्राप्त t (CR) का मान उपरोक्त दोनों मानों से कम है । कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक–04

विज्ञान एवं वाणिज्य समूह की छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

N_1	N_2	M_1	M_2	σ_1	σ_2	CR	0.05	0.01
40	**40**	**128.31**	**124.72**	**13.34**	**14.82**	**1.30**	**1.98**	**2.63**

प्राप्त t (CR) का मान उपरोक्त दोनों मानों से कम है । कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक–05

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं में सामाजिक धर्म एवं विवाह संबंधी आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

N_1	N_2	M_1	M_2	σ_1	σ_2	CR	0.05	0.01
120	**120**	**40.58**	**38.04**	**8.75**	**7.71**	**3.08**	**1.98**	**2.63**

प्राप्त t (CR) का मान उपरोक्त दोनों मानों से अधिक है । अतः 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक–06

समाज में महिलाओं की स्थिति व शिक्षा संबंधी घटकों का तुलनात्मक अध्ययन

N_1	N_2	M_1	M_2	σ_1	σ_2	CR	0.05	0.01
120	**120**	**20.67**	**21.52**	**4.78**	**5.85**	**1.7**	**1.98**	**2.63**

प्राप्त t (CR) का 0.05 एवं 0.01 स्तर के मानों से कम है, कोई सार्थक अंतर नहीं है । अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध सागर शहर के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में आधुनिकीकरण की अभिवृत्ति मापन से पता चलता है कि दी गई परिकल्पनाओं में 0.05 एवं 0.01 पर कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् सभी परिकल्पनायें स्वीकार की जाती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. भटनागर सी.एस : एजूकेशन एण्ड सोशल चेंज निरवा एसोसिएट्स कलकत्ता 1972
2. शर्मा आर.ए. (1995) : शिक्षा अनुसंधान, नवीन संस्करण, मेरठ बुक डिपो 658 पीपी
3. राय पारसनाथ (1997) : अनुसंधान परिचय तृतीय संस्करण आगरा, शिक्षा संबंधी प्रकाशन
4. सरीन शशिकला एवं सरीन : शैक्षिक अनुसंधान विधियॉ नवीनतम संस्करण, अंजनी (1995) आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर 434